नवीन यज्ञोपवीतको अभिमन्त्रित करना

श्रावणी उपाकर्मके दिन वर्षभरके लिये यज्ञोपवीतको अभिमन्त्रित कर रख लेना चाहिये। किसी कारणवश यज्ञोपवीत अभिमन्त्रित न हो तो नवीन यज्ञोपवीतको निम्न रीतिसे अभिमन्त्रितकर धारण करना चाहिये।

सर्वप्रथम शुद्ध आसनपर पूर्वाभिमुख होकर बैठे और आचमन करनेके उपरान्त अपने सामने पलाशके पत्ते अथवा किसी पात्रपर नवीन यज्ञोपवीतको रखकर जलसे प्रक्षालित करे। तदुपरान्त निम्नलिखित एक-एक मन्त्र पढ़कर अक्षत-चावल या एक-एक फूल अथवा जलको यज्ञोपवीतपर छोड़ता जाय-

प्रथमतन्तौ ॐ ओङ्कारमावाहयामि ।

द्वितीयतन्तौ ॐ अग्निमावाहयामि।

तृतीयतन्तौ ॐ सर्पानावाहयामि ।

चतुर्थतन्तौ ॐ सोममावाहयामि ।

पञ्चमतन्तौ ॐ पितृनावाहयामि ।

षष्ठतन्तौ ॐ प्रजापतिमावाहयामि ।

सप्तमतन्तौ ॐ अनिलमावाहयामि ।

अष्टमतन्तौ ॐ सूर्यमावाहयामि ।

नवमतन्तौ ॐ विश्वान् देवानावाहयामि ।

प्रथमग्रन्थौ ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि ।

द्वितीयग्रन्थौ ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि ।

तृतीयग्रन्थौ ॐ रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि ।

इसकें बाद **प्रणवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः '**

मन्त्रसे यथास्थानं न्यसामि' कहकर उन-उन तन्तुओंमें न्यासकर चन्दन आदिसे पूजन करे। फिर यज्ञोपवीतको दस बार गायत्री मन्त्रसे अभिमन्त्रित करे । इस प्रकार नूतन यज्ञोपवीतकी प्रतिष्ठा करनी चाहिये । तब वह धारण करने योग्य हो जाता है। है। गायत्रीमन्त्रद्वारा अभिमन्त्रित है । इसमें नौ देवताओंका वास है। अत: इसकी प्रतिष्ठाको बनाये रखनेके लिये जरूरी है कि यह सदा पवित्र रहे, जिससे इसके धारणकर्ताका बल, आयु और तेज अक्षुण्ण बना रहे।

नूतन यज्ञोपवीत धारण विधि

स्नानादिकर एक आसनपर बैठकर नवीन यज्ञोपवीतमें हल्दी लगाकर संकल्पकर निम्नलिखित विनियोग पढ़कर जल गिराये । तदनन्तर नीचे दिया मन्त्र पढ़ते हुए एक यज्ञोपवीत धारण करे। आचमन करे और फिर दूसरा यज्ञोपवीत धारण करे। इस प्रकार एक- एक करके ही यज्ञोपवीत पहनना चाहिये-

विनियोग- ॐ यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिङ्गोक्तादेवताः,त्रिष्टुप् छन्दः यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः ।

यज्ञोपवीत धारण करते हुए यह मन्त्र पढ़े-

ॐ यज्ञोपवीतं परम पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् ।

आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।

ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥

पुराने (जीर्ण) यज्ञोपवीतको उतारना-

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर पुराने उपवीतको कण्ठी- जैसा बनाकर सिरपरसे पीठकी ओरसे अलग कर दे -

एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया ।

जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ॥

त्याज्य यज्ञोपवीतको जलमें प्रवाहित कर दे अथवा किसी पवित्र स्थानपर छोड़ दे। इसके उपरान्त यथाशक्ति गायत्रीमन्त्रका जप करे अथवा कम- से-कम दस गायत्रीमन्त्रका जप करे और '**ॐ तत्सत् श्रीब्रह्मार्पणमस्तु**' कहते हुए हाथ जोड़कर भगवान् का स्मरण करे।